7. लोगों के लिए, लोगों के द्वारा पहले से योजना बनाना

फोकस

57 वर्षीय गोपाल हजोंग अपने 5 सदस्यों के परिवार के साथ असम के नलबाड़ी गांव में रहते थे। हर वर्ष निर्दयी ब्रह्मपुत्र नदी उसके मकान को बहा ले जाती थी। उसके मकान के अतिरिक्त पूरा गांव प्रभावित होता था और नब्बे प्रतिशत मकान बह जाते थे। एक दिन एक प्रशिक्षित स्वयंसेवक उसके पास आया और कहा कि वर्षों से हो रहे नुकसान को वे कम कर सकते हैं। सबसे पहले उन्होंने बाढ़ से निपटने के लिए सामुदायिक योजना तैयार करने का निर्णय लिया। उन्होंने सभी गांववालों की सहायता से गांव का नक्शा तैयार किया। यह नक्शा उनके लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस कार्य में उन्हें तीन दिन लगे।

दिन-प्रतिदिन नक्शे में नए ब्यौरे शामिल किए जाने लगे और अन्तत: प्रत्येक मकान का ब्यौरा नक्शे में शामिल हो गया। नक्शा तैयार करने के इस काम से गांववालों को यह पता लगाने का मौका मिल गया कि सबसे अधिक असुरक्षित स्थान कौन-सा है। इस पर हुई बहस से यह स्पष्ट हो गया कि स्थिति में कैसे परिवर्तन किया जा सकता है। गांववालों ने यह निर्णय किया कि अब से सभी मकान ऊंचे स्थान पर बनाए जाएंगे और पीने के पानी की समस्या से निपटने के लिए सभी नलकूप ऊंचे किए जाएंगे। तब सभी गांववालों ने इस विशाल कार्य में अधिक-से-अधिक योगदान करने का निर्णय किया और ग्रामीण आपदा प्रबंधन दलों का गठन किया।

कक्षा 9, अध्याय 6 में हमने आपदाओं के संबंध में सामुदायिक योजना की प्रक्रिया के बारे में चर्चा की थी। उस अध्याय से आगे इस अध्याय में सामुदायिक स्तर पर आपदाओं से निपटने की तैयारी के बारे में व्यावहारिक उपाय करने की रूपरेखा बताई गई है। इसमें महत्वपूर्ण उपायों को शामिल किया गया है, जैसे पास-पड़ौस में या समुदाय में जागरूकता पैदा करना, स्थिति का विश्लेषण करना, कार्य बल का गठन करना और जोखिम को कम-से-कम करने के लिए दीर्घावधि उपाय करने के संबंध में योजना तैयार करना।

सामुदायिक योजना

सामुदायिक योजना एक उन्नत योजना प्रक्रिया है। इस योजना से मानव एवं सामग्री संबंधी संसाधनों का पता चलता है और प्रभावशाली कार्रवाई प्रणाली स्थापित होती है। इसमें बस्ती में रहने वाले लोगों को प्रभावित करने वाली प्रक्रियाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं के बारे में निर्णय लेने के लिए सक्रिय भागदारी की आवश्यकता होती है।

दूसरे शब्दों में, सामुदायिक योजना उन क्रियाकलापों की एक सूची है जिनके लिए पास-पड़ौस, समुदाय अथवा लोगों द्वारा सहमति दी जाती है ताकि चेतावनी मिलने या आपदा आने की स्थिति में जीवन, आजीविका तथा सम्पत्ति की क्षति को रोका जा सके। इस योजना में पहले यह बता दिया जाता है कि जब कोई चेतावनी मिले या आपदा आन पड़े तो अलग-अलग व्यक्तियों, समुदाय अथवा लोगों द्वारा क्या कार्रवाई की जानी चाहिए। ज्यादा जोर घटना के संभावित परिदृश्य को समझने और मानवीय क्रियाओं के प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करने पर दिया जाता है।

हमें योजना बनाने की आवश्यकता किसलिए होती है?

हम किसी भी गंभीर घटना के लिए योजना बना सकते हैं। यह योजना निहित क्रियाओं या प्रक्रियाओं की मात्रा तथा संभावित घटना के कारण प्रभावित होने वाले लोगों की संख्या पर निर्भर करती है। इनमें सर्वाधिक आम प्राकृतिक आपदाएं या औद्योगिक आपदाएं हो सकती हैं जिनका मानवीय क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है। आपदाओं के लिए सामुदायिक योजना का प्रमुख उद्देश्य संबंधित समुदाय की असुरक्षा की संभावना को कम करना तथा आपदा का मुकाबला करने की उसकी मौजूदा क्षमता को सुदृढ़ बनाना होता है। समुदाय-आधारित आपदा प्रबंधन योजना की दृष्टि से आपदा प्रबंधन में लोगों की भागीदारी होना अनिवार्य है। तैयारी के चरण में इसमें लोगों को शामिल करने से आपातकालीन परिस्थितियों में समुदाय द्वारा समन्वित कार्रवाई किए जाने की संभावना बढ़ जाती है।

आकस्मिक योजना यह हो सकती है :

- मानवीय क्रियाओं और जरूरतों को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक आपदा
- महामारी का फैलना या स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्या पैदा होना
- औद्योगिक दुर्घटनाएं (स्थल से संबंधित/स्थल से परे की योजना) होना
- स्टाफ को खतरा, स्टाफ को हटाया जाना, परिसर पर आक्रमण आदि होना
- सिविल आबादी को प्रभावित करने वाला विवाद भड़कना
- खाद्य पदार्थों या अन्य वस्तुओं की कमी होना

लोगों की आकस्मिक योजना का महत्व

यह जरूरी नहीं है कि आकस्मिक योजना अत्याधुनिक, बहुत अधिक वैज्ञानिक अथवा कम्प्यूटर पर तैयार की गई कोई आदर्श योजना हो। इसमें योजना की प्रक्रिया को दर्शाने वाले अनेक चित्र होना भी जरूरी नहीं है। तकनालॉजी का उपयोग अथवा परिष्कृत विश्लेषण केवल तब उपयोगी होता है जब इसमें लोगों की भागीदारी भी हो।

विभिन्न खतरों के लिए लोगों द्वारा कामचलाऊ आकस्मिक योजना बनाने के लिए सामान्यतया बुनियादी सूचना, जोखिम का मूल्यांकन और आसूचना का विश्लेषण उपलब्ध होना ही पर्याप्त होता है। कार्य-योजना बनाना किसी अकेले व्यक्ति का कार्य नहीं हो सकता क्योंकि ज्यादा-से-ज्यादा लोगों के अनुभव और सूचना के आधार पर बनाई गई कार्य योजना ज्यादा सही साबित होती है।

लोगों की आकस्मिक योजना क्यों?

- उन्हें अपने जोखिम तथा क्षमताओं के बारे में बेहतर जानकारी होती है।
- वे जहां रहते हैं उन्हें वहां की और किसी आकस्मिकता से निपटने में समुदाय की ताकत और कमजोरियों की भी अच्छी जानकारी होती है।
- पहले-पहल जवाबी कार्रवाई करने वाले वे ही होते हैं।
- अन्ततः नुकसान उठाने वाले भी वे ही होते हैं। यदि कोई ऐसी स्थिति पेश आए तो उनकी योजनाएं अपेक्षाकृत अधिक प्रभावकारी होंगी।

आकस्मिक योजनाएं विभिन्न स्तरों पर तैयार की जाती हैं जैसेकि पास-पड़ौस, ग्रामीण, खंड, जिला, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर। इसमें सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों संगठनों को शामिल करके इसे बहुत ही खास बनाया जाना होता है। योजना लोक-केन्द्रिक होनी चाहिए अतः इसी कारण इसे लोगों की आकस्मिक योजना का नाम दिया गया है।

प्रभावकारी आकस्मिक योजना बनाने की प्रक्रिया में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को शामिल करना आवश्यक है। योजना बनाने और विकसित करने में समाज के सक्रिय सदस्य आगे आते हैं। आपदा के दौरान कारगर समन्वय के लिए यह महत्वपूर्ण है कि सबसे निचले स्तर पर तैयार की गई योजना उच्च स्तरों पर तैयार की गई योजनाओं के आधार पर ही होनी चाहिएं।

सामुदायिक आकस्मिक योजना को किन बातों का उत्तर देने योग्य होना चाहिए?

आकस्मिक योजना से आपदा के संबंध में तैयारियों के बारे में **कौन, कहां, कब, क्या और क्यों** का उत्तर मिलना चाहिए। योजना से निम्नलिखित का उत्तर मिलना चाहिए :

कौन/किसे	किसे क्या काम सौंपा गया है? कौन कहां रह रहा है? किसे प्राथमिकता दी जाए? संदेशों को कौन सुनेगा? कौन क्या जुटाएगा?
कहां/किधर	कहां सूचित किया जाए? प्रत्येक परिवार कहां रहता है? वे किधर जाते हैं? वे कहां काम करते हैं? आश्रय के लिए सुरक्षित स्थान कहां है?
कब	क्या यह घटना पूर्व चेतावनी के साथ हुई : (घटना से काफी पहले या पूर्व-चेतावनी मिलने पर/घटना या सीज़न से ठीक पहले/घटना के बाद) क्या यह अचानक हुई घटना है : (घटना से पूर्व तैयारी संबंधी उपाय/घटना के दौरान/घटना के बाद)
क्या	समुदाय स्तर पर क्या उपाय किए गए हैं? उपलब्ध संसाधन क्या हैं? आपात-स्थिति से निपटने के लिए क्या-क्या सामग्री जमा की जाए? क्या-क्या उपकरण उपलब्ध हैं? सुरक्षित आश्रय स्थलों और उपकरणों की क्या स्थिति है? भिन्न-भिन्न समय अंतरालों में क्या-क्या किया जाना है?
कैसे	किसी स्थान पर कैसे पहुचा जाए? संदेश कैसे प्राप्त किया जाए? पूर्व-चेतावनी मिलने पर संदेश को कैसे प्रसारित किया जाए? लोगों का सुरक्षित स्थानों पर भेजने की योजना कैसे तैयार की जाए? सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जाए?
क्यों	उपर्युक्त प्रत्येक प्रश्न क्यों?

नोट : इसे पूरी सूची न माना जाए। यह तो सिर्फ एक उदाहरण है।

आकस्मिक योजना के बाद विभिन्न व्यक्तियों द्वारा ऑपरेशनल योजनाओं का पालन किया जाता है। अभ्यास के दौरान सीखे गए पाठों से योजना में आगे और सुधार किया जाना चाहिए।

योजना कैसे तैयार की जाए और आकस्मिक योजना में क्या-क्या बातें शामिल होनी चाहिए?

आकस्मिक योजना बनाने का कार्य समाज के सभी वर्गों के लिए भाग लेने का एक मंच और सुअवसर है। योजना बनाने में हर व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है। एक-दूसरे के विचारों में मतभेद हो सकता है लेकिन इससे योजना प्रक्रिया को हमेशा लाभ ही होगा क्योंकि इससे सभी बातों की जांच-परख करने तथा उनमें सुधार करने का उपयोगी मंच प्राप्त होता है। इस प्रकार अंतिम रूप से जो परिणाम प्राप्त होता है वह अधिक यथार्थपरक होता है। आकस्मिक योजना तैयार करने के काम में कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह भी योगदान कर सकता है। योजना के विकास में हर व्यक्ति को उचित महत्व दिया जाता है।

इस भाग में हम आकस्मिक योजना तैयार करने की प्रक्रिया पर विस्तार से गौर करेंगे। चूंकि भौगोलिक क्षेत्र, जोखिम-स्थल, एक्सपोज़र, असुरक्षा संबंधी पहलू और निहित प्रक्रियाओं के रूप में स्थिति में परिवर्तन हो सकता है, इसलिए प्रक्रिया का ठीक-ठीक निर्धारण नहीं हो सका है। विशेष सामुदायिक आकस्मिक योजना में निम्नलिखित मुख्य बातें शामिल होंगी :

- प्रारंभिक जागरूकता और संपर्क निर्माण
- समुदाय की रूपरेखा तैयार करना
- भागीदारी के आधार पर स्थिति का विश्लेषण करना
- कार्यबलों का चयन, सांकेतिक उत्तरदायित्व एवं क्षमता निर्माण
- अभ्यास/नकली ड्रिल

1. सम्पर्क साधना एवं प्रारंभिक जागरूकता

वरिष्ठ नागरिकों, ग्रामीण स्वयं-सहायता दलों, युवा क्लबों, निर्वाचित प्रतिनिधियों आदि से संबंध बनाना समुदाय आकस्मिक योजना तैयार करने की दिशा में पहला कदम है। इसका प्रमुख उद्देश्य उन्हें प्रेरित करना और योजना प्रक्रिया में शामिल करना है। सामान्यतया, ग्राम स्तर पर कार्यरत सरकारी मुलाजिम, निर्वाचित प्रतिनिधि और स्वयंसेवी संगठन समुदाय स्तर पर योजनाएं तैयार करने में मदद करते हैं।

ग्रुप चर्चा करते हुए लोग

हाल ही की आपदा संबंधी घटना, इसमें शामिल क्षति और जोखिमों की चर्चा करने से प्रारम्भिक रूचि पैदा हो सकती है। इस चर्चा में सभी को भाग लेना चाहिए। यदि समुदाय की याद में चर्चा के लिए हाल का कोई अनुभव न हो तो भी आसपास के क्षेत्रों की घटनाओं पर चर्चा की जानी चाहिए।

समुदाय को सुग्राही बनाने के लिए शहरी क्षेत्र में नुक्कड़ नाटक

इन चर्चाओं के दौरान आपदा से निपटने के लिए उपलब्ध किसी स्थानीय जानकारी की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। जरूरत इस बात की है कि सूचना प्राप्त की जाए और स्थिति का विश्लेषण करने के लिए सार्थक प्रक्रिया के रूप में इसे आगे बढ़ाया जाए।

नीचे दिए गए अनुसार जागरूकता पैदा करने वाली विभिन्न तकनीकें अपनाकर सामुदायिक भागीदारी को जुटाना एक महत्वपूर्ण कार्य है :

- जन सभाएं
- सांस्कृतिक गतिविधियां
- नुक्कड़ नाटक
- दृश्य/श्रव्य उपकरण

- पोस्टरों का प्रदर्शन

इस जागरूकता अभियान से लोगों को योजना बनाने की आवश्यकता को समझने में मदद मिलेगी।

2. ग्रामीण आपदा प्रबंधन समिति (वीडीएमसी) का गठन

ग्रामीण आपदा प्रबंधन समिति (वीडीएमसी) का गठन प्रत्येक गांव में किया जाता हैं और यह समिति आपदा संबंधी तैयारियां करने के लिए उत्तरदायी होती है। इस समिति में स्थानीय निर्वाचित प्रतिनिधियों, साधारण स्तर के सरकारी कर्मचारियों, गैर-सरकारी संगठनों, सीबीओज़, युवाक्लबों तथा महिला समितियों के सदस्यों को प्रतिनिधित्व दिया जाता है। ग्रामीण आपदा प्रबंधन समिति का मुखिया आपदा प्रबंधन योजना तैयार करने के लिए समाज को एकजुट करता है।

3. समुदाय की रूपरेखा तैयार करना

इसमें निम्नलिखित से संबंधित आंकड़े/सूचना प्राप्त की जाती है, अर्थात्:

- आबादी
- स्थानीय संसाधन (दोनों-जैसे कुशल मानवशक्ति, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, भूतपूर्व सैनिक आदि, और सामग्री - जैसे नावें, जनरेटर आदि)
- बस्ती में मकानों की बनावट (आरसीसी, टाइलयुक्त आदि)
- फसल एवं व्यवसाय की रूपरेखा

4. पूर्व में आयी आपदाओं की समीक्षा एवं विश्लेषण

इसका संबंध आपदाओं के बार-बार आने तथा उनसे होने वाली क्षति के विश्लेषण के आधार पर आपदाओं को प्राथमिकता प्रदान करने से है। गांव के बड़े-बूढ़ों की मदद से यह काम किया जा सकता है। गांव के लोग विभिन्न आपदाओं के दौरान हुई क्षति का विश्लेषण करते हैं और उस दौरान अपनाए गए श्रेष्ठ उपायों को ध्यान में रखते हैं। स्थिति के मूल्यांकन के आधार पर समाज के सदस्यों को किए जाने वाले कार्य का दायित्व सौंपा जाता है।

ग्रामीण आपदा प्रबंधन से दर्जनों की जान बचायी जाती है.....

तमिलनाडु के कुडलूर जिले में समुद्र तट के एक गांव के ग्रामीण आपदा प्रबंधन पर पाठ सीख रहे थे तभी उन्हें हत्यारी सुनामी लहरों ने घेर लिया। सीखा गया पाठ तत्काल उनके काम आया और बहुत से लोगों की जान बचायी जा सकती। 2000 की आबादी वाले इस गांव में मरने वालों की संख्या 21-22 तक सीमित रही। गांव वालों को कहा गया कि समुद्र में डूबते समय वे सूखे पेड़ के तने या खाली ड्रमों का इस्तेमाल करें। इस गांव में ग्रामीण आपदा प्रबंधन समिति का गठन पिछले साल अक्टूबर में ही किया गया था। टीम में शामिल महिलाओं को पीड़ित व्यक्तियों को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने के काम में लगाया गया।

स्रोत : दैनिक जागरण

5. आपदाओं से संबंधित मौसम कैलेण्डर

विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के बारे में अपने पिछले अनुभवों को ध्यान में रखते हुए समुदाय आपदाओं के घटित होने के आधार पर मौसम संबंधी कैलेण्डर तैयार करता है :

आपदाओं के बारे में मौसम संबंधी कैलेण्डर

	खतरा	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अग.	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
1.	बाढ़							✓	✓	✓			
2.	चक्रवात				✓	✓					✓	✓	
3.	सूखा								✓	✓			
4.	वनों में आग				✓	✓							
✓		घटित होने का महीना											

4. नक्शा तैयार करना

ग्राम स्तर पर आपदा प्रबंधन योजना तैयार करने का एक महत्वपूर्ण कार्य स्वयं समुदाय द्वारा ग्राम को खतरे, असुरक्षा तथा उसकी क्षमताओं की योजना का खाका तैयार करना है क्योंकि वास्तविक आंकड़े एकत्र करने के लिए यह एक सरल एवं कम लागत वाला उपाय है। यह कार्य सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पार्टिसिपेटरी रूरल एप्रेजल) के जरिए किया जा सकता है। खाका तैयार करने के इस कार्य का उद्देश्य विशेषकर कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए योजना प्रक्रिया को चित्रों द्वारा प्रस्तुत करना है। इस प्रकार, महिला-पुरूष और जाति तथा अन्य प्रकार से बटी अधिकांश ग्रामीण आबादी को इस कार्य में शामिल करना सुनिश्चित किया जा सकेगा। ग्रामीणों/समुदाय के सदस्यों को विभिन्न मदों और संकेतकों के लिए स्थानीय तौर पर उपलब्ध पत्थरों, कलर पाउडर आदि का प्रयोग करते हुए जमीन पर ही नक्शे बनाने के प्रोत्साहित किया जाता है। नक्शे निम्न प्रकार के होते हैं :

गांव में नक्शा बनाने का कार्य चल रहा है।

(क) सामाजिक नक्शा बनाना

ग्रामीणों/समुदाय को बस्ती का सम्पूर्ण नक्शा चित्रों द्वारा दिखाया जाना चाहिए। इस नक्शे में निम्नलिखित दिखाए जाने चाहिएं।

- क्षेत्र की प्राकृतिक स्थिति के अनुसार मकानों की स्थिति।
- पक्के एवं कच्चे मकानों की संख्या
- अन्य बुनियादी सुविधाएं (उदाहरण के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल, मन्दिर, मस्जिद, चर्च, पीने के पानी की सुविधाएं, स्कूल, स्वास्थ्य केन्द्र, अस्पताल, टेलिफोन, सार्वजनिक सम्बोधन प्रणाली, सड़क, बिजली आदि)

क्रियाकलाप

10 छात्रों का एक दल बनाईए और अपनी बस्ती का सामाजिक नक्शा तैयार कीजिए जिसमें मकानों, सामुदायिक स्थलों, सड़कों आदि को दर्शाया गया हो। नक्शे में दर्शायी गई प्रत्येक मद को प्रतीक चिह्न दीजिए जैसाकि आपके दायीं ओर के नक्शे में दिखाया गया है।

पथापेटा गांव का सामाजिक नक्शा

(ख) संसाधनों को नक्शे में दिखाना

इसमें स्थानीय तौर पर उपलब्ध उन संसाधनों और उपयोगी स्थलों की ओर ध्यान दिलाया जाता है जिनका उपयोग आपदा के दौरान एवं आपदा के पश्चात् समुदाय की क्षमताओं का विकास करने के लिए किया जा सकता है। व्यक्ति-विशेष के कौशल को भी नक्शे में दिखाया जा सकता है। इस प्रकार संसाधनों का नक्शा उपलब्ध संसाधनों को दर्शाने वाली ही नहीं होता, बल्कि इसमें इनके वितरण, पहुंच तथा इस्तेमाल को भी दर्शाया जाता है।

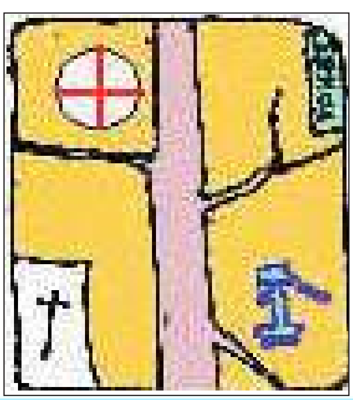

क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों को नक्शें में दिखाने में निम्नलिखित शामिल हैं :

- व्यक्ति विशेष के कौशल (समुदाय के प्रमुख व्यक्ति/डॉक्टर/ड्राइवर, तैराक आदि)
- क्षेत्र के इर्द-गिर्द संसाधन (नावें, खाद्य सामग्री आदि)
- महत्वपूर्ण स्थान जैसे खुली जमीन/निचाईं/ऊँचाई पर स्थित क्षेत्र
- सुरक्षा बांध
- जल-निकासी सुविधाएं
- कृषि क्षेत्र, वन क्षेत्र, मैंग्रोव रोपण, आश्रय स्थल आदि

असम की ग्राम योजना के तहत समुदाय द्वारा तैयार किया गया यह चित्र संसाधनों का एक नक्शा है। इस नक्शे में मानव संसाधनों, आपात स्थिति के दौरान इस्तेमाल में लाए जाने वाले उपकरणों, खाली स्थानों आदि को दिखाया गया है।

(ग) असुरक्षित स्थलों का नक्शा तैयार करना

नक्शा तैयार करने के इस काम में समुदाय के सदस्यों से यह जानकारी रखने की आशा की जाती है कि गांव को किस प्रकार के खतरों की संभावना है और ऐसे कौन-से क्षेत्र हैं जो प्रभावित हो सकते हैं, जैसे

- मकानवार असुरक्षित इलाके
- असुरक्षित मकान एवं टूटी-फूटी इमारत
- बाढ़ से प्रभावित हो सकने वाले निचले क्षेत्र
- भूस्खलन की संभावना वाले क्षेत्र
- खतरनाक उद्योगों/बिजली प्रतिष्ठानों/ऊंची और कमजोर इमारतों आदि की अवस्थिति
- तंग सड़कें

बरहीपुर गांव के असुरक्षित स्थानों को दिखाने वाला नक्शा

(घ) सुरक्षित एवं वैकल्पिक मार्गों का नक्शा तैयार करना

इस कार्य में समुदाय के सदस्यों को यह जानकारी होने की उम्मीद की जाती है कि वे कौन-से क्षेत्र हैं जो सुरक्षित हैं। उदाहरण के तौर पर, जिन क्षेत्रों में बार-बार बाढ़ आती है में यह पता होना चाहिए कि वहां कौन से मकान ऊंचाई पर हैं, कौन सी बहु-मंजिली इमारतें हैं और कौन से टीलें हैं।

इस नक्शे में उस क्षेत्र में पहुंचने का सबसे सुरक्षित वैकल्पिक मार्ग भी दिखलाया जाना चाहिए। यह सड़क मार्ग या जलमार्ग भी हो सकता है।

5. आपदा प्रबंधन दलों (डीएमटी) का चयन

स्थिति का विश्लेषण करने और संसाधनों का नक्शा तैयार करने के बाद अगला कदम गांव/वार्ड/नगर में आपदा प्रबंधन दलों/कार्यबलों का गठन करना होता है ताकि संकट की किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए सक्रिय रूप से कार्रवाई की जा सके।

आपदा प्रबंधन दलों का चयन

समुदाय के इच्छुक तथा सक्रिय स्त्री-पुरुष आपदा प्रबंधन दलों के सदस्य हो सकते हैं। आपदा प्रबंधन दलों/कार्य बलों के सदस्यों में अनुभवी एवं कुशल लोगों जैसे डॉक्टरों, नर्सों, अग्निशमन कार्मिकों, भूतपूर्व सैनिकों, पुलिस कार्मिकों, तैराकों, ऐसे युवाओं को जो स्काउट / एनसीसी / एनएसएस में रहे हों तथा नागरिक सुरक्षा कार्मिकों, महिला समिति के सदस्यों को शामिल किया जाना चाहिए। 400-500 मकानों वाली एक इकाई में 25 सदस्यों का एक कार्य बल होना आदर्श स्थिति है। यदि क्षेत्र या समुदाय बड़ा हो तो इन कार्यबलों की संख्या बढ़ायी जा सकती है। चुने हुए कार्य बलों को आपदा से पूर्व/आपदा के दौरान तथा आपदा के पश्चात् सौंपे जाने वाली जिम्मेदारियों का निर्धारण करना आवश्यक है। विभिन्न कार्य बल निम्न प्रकार हैं :

पूर्व चेतावनी दल, प्राथमिक चिकित्सा दल, बचाव एवं खाली कराने वाला दल, आश्रय स्थल प्रबंधन, राहत दल, पानी एवं सफाई दल, शव-निपटान दल, मानसिक आघात निवारण परामर्श, क्षति मूल्यांकन।

क्रियाकलाप

कोई एक दल चुनिए और आपदा से पूर्व, आपदा के दौरान तथा आपदा के पश्चात् दल के सदस्यों की भूमिका और उत्तरदायित्वों का उल्लेख कीजिए।

6. आपदा प्रबंधन दलों (डीएमटी) को प्रशिक्षण

गांव के स्वयंसेवकों को खोज एवं बचाव कार्य में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

चुने हुए दल के सदस्यों को खास कौशलों में अच्छी प्रकार से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है जिससे कि वे आपदा की स्थिति में अपने निर्धारित कार्यों को कुशलतापूर्वक कर सकें। वे आपदा प्रबंधन दल जिन्हें प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है, ये हैं:

1. प्राथमिक चिकित्सा दल
2. बचाव एवं क्षेत्र को खाली कराने वाला दल
3. पानी एवं सफाई व्यवस्था
4. मानसिक आघात निवारण परामर्श

आपदा प्रबंधन दलों/कार्य बलों के सदस्यों को प्रशिक्षित करने हेतु अग्निशमन सेवा, स्थानीय स्वास्थ्य केन्द्र, रेडक्रास, सेंट जॉन एम्बुलेंस आदि की सहायता ली जाती है।

7. पूर्वाभ्यास / नकली ड्रिल और योजना को अद्यतन बनाना

नकली ड्रिल करते हुए ग्रामीण आपदा प्रबंधन दल

आग से दुर्घटना होने पर किए जाने वाले उपायों के बारे में नकली ड्रिल करते हुए ग्रामीण कार्य बल के सदस्य

वास्तविक आपदा की स्थिति में की जाने वाली कार्रवाई की ड्रिल/पूर्वाभ्यास करना महत्वपूर्ण है। नकली ड्रिल आपदा संबंधी तैयारी की योजना का अभिन्न अंग है क्योंकि समुदाय को सतर्क रखने के लिए यह तैयारी सबंधी ड्रिल है।

ड्रिल मूलत: योजना के अनुसार किये जाने वाले वे कार्य हैं जो प्राय: नकली तौर पर किये जाते हैं और जिनके बारे में लोगों को पहले सूचित कर दिया जाता है। यदि इनका अभ्यास पहले कई बार कर लिया जाय तो समुदाय स्थिति के अनुसार कार्रवाई करने के लिए भलीभांति तैयार हो जायेगा। आमतौर पर वास्तविक स्थिति को ध्यान में रखते हुए ऐसा किया जाता है। चक्रवात या बाढ़ की संभावना वाले क्षेत्रों में यह ड्रिल साल में दो बार, पहली चक्रवात / बाढ़ के मौसम से ठीक पहले तथा दूसरी 6 महीने के बाद की जाए। ये ड्रिल साल में कम-से-कम दो बार की जानी चाहिए। योजनाएं सिर्फ कागजी योजनाएं बनकर न रह जाएं। ये प्रभावकारी तथा कार्यसाधक होनी चाहिए। योजना से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि इससे कार्य बल के सदस्यों की जिम्मेवारी और उस क्षेत्र में रह रहे

परिवारों/व्यक्तियों को ध्यान में रखा जाय। समय बीतने के साथ-साथ उस क्षेत्र विशेष में कई परिवर्तन/परिस्थितियों में बदलाव हुए होंगे जिसके लिए आकस्मिक योजना बनाई गई है। इसलिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि योजना में हर छह महीने में या साल में कम से कम एक बार अद्यतन सूचना के आधार पर संशोधन किया जाए। समुदाय द्वारा तैयार की गई कार्य योजना का उद्देश्य क्षेत्र का विकास करना होना चाहिए। यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि समुदाय द्वारा तैयार की गई योजना का क्षेत्र के लिए तैयार किये गये बड़े कार्यक्रमों/विकास योजनाओं के साथ कारगर तालमेल होना चाहिए।

छात्रों के लिए सुझाए गए क्रियाकलाप

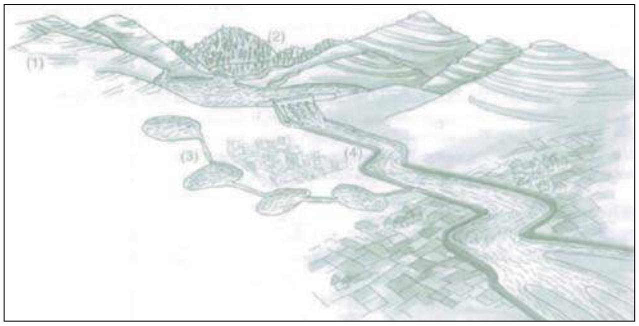

- देश में एक प्राकृतिक आपदा का चुनाव कीजिए ओर पता लगाइए यह आपदा क्या थी, यह कहां और कब आई।
- स्थानीय समुदाय, विभिन्न जीवन-रेखाओं और अनिवार्य सेवाओं पर इस आपदा का क्या प्रभाव पड़ा?
- क्या स्थानीय लोग तैयार थे और क्या उनके पास कोई आकस्मिक योजना थी?
- पीड़ित लोगों को किस किस्म की परेशानियां झेलनी पड़ीं और उन्होंने आपदा के दौरान तथा आपदा के पश्चात् उनका सामना कैसे किया?
- आपके विचार में नुकसान न होने देने के लिए समुदाय और प्रशासन द्वारा क्या उपाय किए जाने चाहिए थे?
- थोड़े से शब्दों में यह बताइए कि इस प्रकार की आपदा के फिर से आने पर इससे बचाव करने के लिए समुदाय द्वारा इसके प्रभाव को कम करने तथा तैयारी संबंधी क्या उपयुक्त उपाय किए जाने चाहिए।

अभ्यास

1. समुदाय की आकस्मिक योजना की परिभाषा वर्णन कीजिए और योजना की आवश्यकता के बारे में दो कारण दीजिए?
2. समुदाय की आकस्मिक योजना के चार तत्वों का नाम बताइए अथवा यह बताइए कि समुदाय की आकस्मिक योजना में क्या-क्या शामिल होना चाहिए?
3. यह बताइए कि संसाधन नक्शे में क्या-क्या होना चाहिए?
4. चार विभिन्न कार्य बलों की पहचान बताइए और प्रत्येक कार्य बल के दो-दो उत्तरदायित्वों का उल्लेख कीजिए?

आगे और अध्ययन के लिए संदर्भ

www.ndmindia.nic.in

www.osdma.org

www.gsdma.org

http://www.undmpt.org/modules_e.htm

(ए बुक ऑन इन्ट्रोडक्शन टू नेचुरल हेजार्ड्स, थर्ड एडीशन डिजास्टर मैनेजमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम, यूएनडीपी डीएचए 1997)

http://planningcommission.nic.in/plans/planrel/fiveyr/10thvolume1/v1_ch7 pdf (Chapter7-Disaster Management : The Development Perspective)

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

'शिक्षा केन्द्र' 2, कम्युनिटी सेन्टर,
प्रीत विहार, दिल्ली-110 092, भारत
फोन : 91-011-22509252-57/59, फैक्स : 91-011-22515826
ई-मेल : cbsedli@nda.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.cbse.nic.in